① • निबंध → "राष्ट्रीय एकता एवं समाज सेवा में हमारी सहभागिता" !!
• विषय →

Name- Aanchal Meshram
• BAMS 2nd proff.

(1) प्रस्तावना।
(2) राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय।
(3) राष्ट्रीय एकता मे बाधक कारण एवं प्रभाव।
(4) राष्ट्रीय एकता का समाज मे महत्व।
(5) समाज सेवा में हमारा योगदान।

1) प्रस्तावना - राष्ट्रीय एकता यह एक महत्वपूर्ण विषय होने के कारण समाज मे लोगो के मन में इस विषय के प्रति रुझान आवश्यक है। हम सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक रूप से स्वयं व समाज को एक सूत्र में बांधने हेतु इसके प्रभुत्व को बनाए रखने पर बल दे सकते है।

(2) राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय → राष्ट्रीय एकता जानने से पहले हमे राष्ट्र को जानना आवश्यक है। राष्ट्र अर्थात जन का एक वृहद वृहद समूह। राष्ट्रीय एकता से तात्पर्य राष्ट्र में रहने रहने वाले अलग-अलग/विविध विविध प्रान्त, धर्म, जाति एवं पंथ के लोगो के बीच में विविधता होते हुए भी उनके बीच पारस्परिक सामंजस्य का होना व किसी प्रकार के अभेद का बना रहना ही राष्ट्रीय एकता का मूल उद्देश्य है। राष्ट्रीय एकता से तात्पर्य यह बिल्कुल भी नही है कि राष्ट्र मे मतभेद न हो अथवा किसी विषय पर विवाद व मतभेद दोनो न हो बल्कि किसी यह है कि यदि किसी विषय पर विचार-विमर्श होकर समाधान जनहित मे हो जिससे समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव व त्रुटि उत्पन्न न हो। यदि देश की एकता सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित रहे तो किसी भी बाधक कारण के उत्पन्न होने पर भी समाज की प्रफुल्ल एवं एकता पर किसी भी प्रकार का संशय न हो सके।

3) राष्ट्रीय एकता मे बाधक कारण → 1) जातिगत भेदभाव ।
2) सामाजिक तत्व ।
3) विदेशीय सत्ता का अनुपालन |
4) जागरूकता का ह्रास ।

1) जातिगत भेदभाव → राष्ट्रीय एकता मे प्राथमिक रूप से जातिगत भेदभाव भी बाधा उत्पन्न करता हैं जिससे जन समूह में आपसी अनेकता व विवाद उत्पन्न होते हैं वर्ष 1987 मे हुए आंदोलन के बाद भारतीय एकता एवं अखण्डता को बनाए रखने हेतु कई क्रांतिकारियों द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किए गए किंतु पुनः कुछ समय बाद प्रांतो मे आज भी जातिगत भेदभाव मे हिन्दु व मुसलमान द्वारा किए गए अनेक दंगो के चलते कई प्रकार से सामाजिक एवं धार्मिक रूप से जनसमूह को क्षति हुई हैं जिसके कारण आज भी भारत मे जातिगत भेदभाव का कई प्रांतो मे चलन हैं

2) सामाजिक तत्व → सामाजिक तत्व मे मुख्य रूप से आतंकवाद संगठन, कट्टरपंथी, अज्ञानता पूर्वक विषय पर टिप्पणी करने वाले तत्व विद्यमान हैं जिन्होने हमारी एकता को क्षति पहुंचाई है जिसके कारण मनुष्यता नष्ट होती जा रही है एवं मनुष्य अपने कर्तव्यो एवं समाज मे अपनी भूमिका को समझ नही पा रहा | वर्ष 2012 मे आने वाले कुछ आतंकवादी संगठन के द्वारा भारत की एकता पर मुख्य रूप से बाधा पहुंची उत्पन्न हुई जिससे लोगो में एकता न रहकर स्वयं जन समूह मुख्य रूप से प्रभावित हुआ |

3) विदेशीय सत्ता का अनुपालन → विदेशीय सत्ता का आगमन देश मे तब से ही प्रारंभ हुआ जब से समाज भारत मे अंग्रेजो का आगमन हुआ जिससे उन्होने भारत की संस्कृति, प्रतिष्ठा, जन भूमि एवं गरिमा पर विशेष प्रभाव डाला जिसके चलते उन्होने भारत की एकता का खण्डन कर दिया | उनके अंग्रेजो के द्वारा कई वस्तुओं एवं सामग्रियो का आदान-प्रदान कहीं न कहीं भारतीय एकता को खोखला कर रहा था जिसका प्रभाव हमे 200 वर्षो तक अंग्रेजो द्वारा किए जाने वाले शासन के अनन्तर ज्ञात हुआ|

(3) ④ जागरूकता का ह्रास ⟩ जागरूकता से तात्पर्य जन समूहो का उनके कर्तव्यो के प्रति सशक्त एवं क्रियाशील रहना है। आज मनुष्य सामाजिक रूप से अपने कर्तव्यो का अनुपालन व शीलन मे अपनी भूमिका का अनुमोदन नही कर पा रहा | किन्तु राहुल गांधी सर द्वारा चलाए गए "भारत जोड़ो अभियान' द्वारा भी लोगो ने जागरूकता को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय एकता मे अपनी सहभागिता दी | राष्ट्रीय एकता वरन एक विषय ही नही है अपितु यह हमे जागरूक करती है कि हम अपने कर्तव्यो का पालन कर देश के जन समूह को एक सूत्र में बांधे |

राष्ट्रीय एकता हेतु कई प्रयास किए गए जिनमें महात्मा गांधी जी द्वारा कई सत्याग्रह, दाण्डी यात्रा प्रारंभ किया गया इस हेतु वल्लभ भाई पटेल जयंती के उपलक्ष मे प्रतिवर्ष '31 अक्टूबर" को राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया जाता है। राष्ट्रीय एकता केवल हमे सामाजिक रूप मे ही नही जोड़ती बल्कि इसके द्वारा डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम सर द्वारा इंडिया विजन 2020 के स्वप्न को पूरा कर भारत को एक नए समृद्ध एवं सशक्त रूप मे उभार सकते है।

4) राष्ट्रीय एकता का समाज मे महत्व ⟩

राष्ट्रीय एकता का समाज मे आर्थिक, व्यावसायिक, मानसिक एवं सांस्कृतिक धरोहर एवं अन्य विषयो पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। राष्ट्र का वर्धन करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य होना चाहिए | राष्ट्रीय एकता के द्वारा प्रत्येक मनुष्य देश के समृद्धि एवं विकास मे अपनी भूमिका अदा कर सकता है। हम अपने देश को उस प्रगति की ओर ले जा सकते हैं जो हमारे भूतकालीन महापुरुषो एवं कई जन समूहो द्वारा प्रयास किया जा रहा था | यदि जन समूह अपने कर्तव्यो के प्रति जागरूक होगा तो आने हमारी संस्कृति एवं सत्ता का ह्रास न नही होगा | असामाजिक तत्वो का राष्ट्र मे आगमन होने से बच सकता है।

(4) (6) सामाजिक सेवा मे हमारा योगदान ? सर्वप्रथम प्रत्येक नागरिक जो किसी भी पंथ, जाति, धर्म आदि से संबंध रखता हो उन सबका कर्तव्य है कि वह भारत की एकता एवं समाज की सेवा मे अपना योगदान दे। अन्यथा भारत की समृद्धि व विकास को हम हास पहुंचा रहे हैं। मैं एक चिकित्सक व्यवसाय से संबंध रखते हुए अपनी सहभागिता को इस प्रकार प्रकट करती हूँ कि चिकित्सक होने या ना होने से भी मैं अपने जन समूह की समस्या का निवारण करके उन्हे समस्त बाधाओं से मुक्त करू। न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी प्रयास करू। भारत मे आने वाली अनेक महामारी एवं व्यथाओं मे जन समूह के रोगो का निवारण कर उन्हे सभी प्रकार से मुक्त करू। जिससे वह सामाजिक सेवा मे योगदान देने से तात्पर्य है कि मैं लोगो को जागरूक करने वाले हुए प्रयासो मे अपनी भी सहभागिता बनाए रखूं। जिससे हमारे देश की एकता, अखण्डता एवं सत्ता का किसी भी प्रकार से ह्रास न हो। मैं अपने व्यवसाय काल भी कर्तव्यो का निर्वाहन करू एवं समस्त जन समूहो को उनके भारत एवं समाज के प्रति के योगदान से ~~परिचित~~ अवगत कराऊँ। इस हेतु भारतीय संविधान मे बताए गए कथनो का पालन करते हुए देश की एकता, अखण्डता, धर्मनिरपेक्षता, प्रभुत्व एवं सत्ता व संस्कृति को बनाए रखने मे जन समूह को प्रेरित करने मे योगदान देती रहूं ॥

! "धन्यवाद" !